पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 3, अंक 33 माह - दिसंबर 2021, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

डॉ. हरीसिंह गौर विवि कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता ने किया विचार कार्यालय का भ्रमण

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

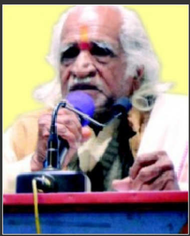

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 3, अंक - 33, दिसंबर - 2021

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com

Phone: 9575737475

07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

आलेख :-

1. छत्रपति शिवाजी महाराज
और भारत का विचार 4

2 महिलाओं को वकालत का हक दिलाने
वाले डॉ. गौर 7

विचार समिति की गतिविधियां :-

1. विजय मशाल यात्रा का विचार
समिति द्वारा स्वागत 10

2. 10 राज्यों में पहुंची विचार गोमय पूजन किट -
ऑनलाइन माध्यम से हुआ विक्रय 11

3. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय विचार समिति
के लिए हर संभव मदद करेगा : कुलपति........ 12

4. सुरेश जैन बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार एवं
विमला जैन समाज गौरव उपाधि से अलंकृत 14

5. डॉ. गौर की 152वीं जयंती पर पधारे विशिष्ट अतिथियों
को समिति ने गोबर निर्मित पूजन किट भेंट कीं 16

6. टाइम लाइन - 2021
इस वर्ष विचार समिति की मुख्य गतिविधियां 17

मीडिया कवरेज :- 22

छत्रपति शिवाजी महाराज और भारत का विचार

प्रसाद राजे भोपले
छात्र

मराठा जिन्होंने तीन चौथाई हिंदुस्तान पर राज किया। उनके जनक 'शिवाजी महाराज' के बारे में हमारी इतिहास की किताबों में सिर्फ 5-6 पंक्तियां है। ये गलत सिर्फ इसलिए नहीं हैं कि हम शिवाजी महाराज जैसे महान राजा के बारे में जान नहीं पाते, पर इसलिए है कि हम हमारे बच्चों को इनके जीवन का सबक नहीं सिखा रहे हैं। तो आइये उनके बारे में ऐसा कुछ जानते हैं जो आपकी जिंदगी सवार सकता है।

पहला - संगठन और सशक्तीकरण

शिवाजी राजे उनकी मां जीजाबाई की देखरेख में बड़े हुए। जीजाबाई ने उन्हें मां के संस्कार और पिता का ज्ञान दोनों दिया। बचपन से उन्हें रामायण व महाभारत की कहानियां सुनाईं और उनसे छोटे शिवाजी ने एक एहम बात सीखी 'संगठन'। भगवान राम खुद काबिल थे पर किसी भी समय अकेले नहीं थे। महाभारत में पांडवों का एक साथ होना ही उनकी ताकत थी। ये सिर्फ कहानियां नहीं है। उनमें एक राजा को और इस नए युग में लीडर्स को सीखने जैसा बहुत कुछ है। ये सारा ज्ञान बाल शिवाजी को छोटी उम्र में मिला।

स्वराज एक सपना था, और ये सच सिर्फ इसीलिए हो पाया क्योंकि यह सपना हर एक मराठा अपने दिलोजान से लेकर चलता था।

सिर्फ 38 सालों में 350 से ज्यादा किले काबिज करना कोई साधारण बात नहीं और ये तभी संभव हुआ जब वीर शिवाजी ने मावल नाम के छोटे से इलाके में अपनी एक छोटी लेकिन काफी निष्ठावान सेना बनाई। स्वराज्य के हर एक सदस्य को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाया। उनसे दोस्ती बनाए रखने के लिए शिवाजी महाराज ने उनकी थाली में खाना खाया, ताकि वो समझें कि ये सिर्फ राजा नहीं बल्कि ये हमारे राजा हैं।

छत्रपति जी के जीवन काल से ये सीखने जैसा है।

दूसरा - साहस, दूरदृष्टि और अपनों का विचार

छत्रपति शिवाजी राजे भारतीय नौदल के जनक है। हम लोग ये तो जानते है की यूरोप के शासकों ने पूरी दुनिया पर उनके नौदल के बलबूते पर राज किया लेकिन हम ये नहीं जानते कि भारत के चोला और पंड्या साम्राज्य जहाज निर्माण की कला में यूरोप से भी आगे थे। आज अगर आप इंडोनेशिया और थाईलैंड में जायेंगे तो रामायण की कहानियों पर आधारित कई मंदिर पाएंगे। हमारी संस्कृति को दूर-दूर तक पहुंचाने का श्रेय इन दक्षिण साम्राज्यों को जाता है लेकिन 13वीं शताब्दी से हमारी नौदल शक्ति कमजोर हो रही थी, जिससे हम व्यापार के लिए अरबी लोगों पर निर्भर हो गए और नौदल कमजोर होने के कारण हमें ब्रिटिश और पुर्तगाली साम्राज्यों से खतरा हो गया। शिवाजी महाराज जानते थे की उनके स्वराज्य को खतरा सिर्फ सल्तनतों से नहीं है। इन यूरोप की ताकतों से भी है, इसीलिए उन्होंने भारत की नौसेना फिर से खड़ी की। शिवाजी महाराज ने खुद की नौसेना खड़ी करके विशाल यूरोपीय साम्राज्यों से भिड़ने का साहस किया और अंग्रेज, डच, पुर्तगालियों को हराया लेकिन साहस के साथ में शिवाजी अपने लोगों के बारे में विचार भी करते थे। मतलब कि उनकी लड़ाई की वजह से सामान्य जनता को कोई हानि नहीं होनी चाहिए और जब हानि होती हुई दिखती थी तब वे पीछे हट जाते थे। जैसे कि बिना लड़ाई किए उन्होंने मिर्जा राजे जयसिंह से संधि कर ली थी। यह चीज हमें भगवान कृष्ण के जीवन में भी देखने को मिलती है। उन्होंने कंस जैसे क्रूर और ताकतवर राजा को तो धूल चटाई लेकिन जरासंध से युद्ध टालने के लिए उन्होंने खुद के घर मथुरा को त्याग कर द्वारका चले गए। क्यों? क्योंकि वे जानते थे की जरासंध का बैर भगवान कृष्ण से है न कि मथुरा से। उनके इस निर्णय से न जाने कितने मथुरा वासियों की जान बच गई। **जैसे शिवाजी महाराज और भगवान कृष्ण अपनों का विचार करते थे वैसे ही विचार समिति अपनों का विचार करने का प्रयास कर रही है।**

इतिहासकार मानते हैं कि छत्रपति शिवाजी की सेना में 30 बड़े जहाजों के अलावा 600 से अधिक लड़ाकू नौकाएं

थीं, जिनकी मदद से मराठों ने अंग्रेजों को पश्चिम महाराष्ट्र से भगाया था। छत्रपति एक ऐसे विवेकी थे जो अंग्रेजों के इरादे जानते थे और एक छोटी सेना के साथ भी बड़ी लड़ाइयां जीतते थे। यही दृष्टि अगर भारत के दूसरे राजा पाते तो शायद भारत अंग्रेजों का गुलाम न होता।

तीसरा - एकता की शक्ति

अंग्रेजों के 'डिवाइड एंड रूल' की मिसालें तो आज भी दी जाती हैं, लेकिन शिवाजी राजे का तरीका सच्चा भी था और ज्यादा कारगर भी। औरंगजेब ने खुद कहा था कि 19 साल के लिए मैंने मेरी पूरी ताकत शिवाजी महाराज को हराने में लगाई, लेकिन फिर भी उनका राज्य बढ़ता ही रहा। पर कैसे ?

जब एक सेना एक प्रयोजन के साथ लड़ती है, तो वो खुद से ज्यादा ताकतवर सेना को भी अपने घुटनों पर ला देती है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने लोगों से पूछा कि हम हमारी ही धरती पर डरकर क्यों जिएं? दूसरों की गुलामी क्यों करें? क्या हम खुद खुदको संभालने के लायक नहीं हैं? सवाल आसान है और उसका जवाब है एक विचार 'स्वराज्य' इसी विचार ने आने वाले समय में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाले लोकमान्य तिलक से नेताजी सुभाष चंद्र बोस तक स्वतंत्र सेनानियों को प्रेरणा दी। व्यापार क्षेत्र में कहा जाता है, 'क्यों' इस सवाल से शुरू कीजिए। जिंदगी में उद्देश्य ढूंढिए और अगर आपका उद्देश्य लोगों को प्रेरित करता है तो लोग जुड़ते ही जायेंगे। ये आसन सीख हम शिवाजी राजे की जिंदगी से सीख सकते हैं।

आपको नहीं लगता क्या? कि ये व्यवहारिक ज्ञान बच्चों को कम आयु में ही सिखाना चाहिए। आपको नहीं लगता क्या? हम अच्छा नागरिक के साथ उन्हें अच्छा नेता भी बना सकते हैं। आज इंग्लिश शिक्षा के नाम पर हमें हमारी जड़ों से काटने का काम किया जा रहा है। आज हमें हमारे इन जड़ों से जुड़ने की जरूरत है।

क्योंकि आज हमारे भारत में राजनेताओं की तो भरमार है लेकिन लोकनेताओं का अभाव है, जो भारत के भविष्य के बारे में कम लेकिन भविष्य में आने वाले चुनाव के बारे में ज्यादा सोचते हैं। ये बातें तो छत्रपति जैसी करते है लेकिन काम औरंगजेब वाले करते है। इन्ही कारणों की वजह से आज छत्रपति शिवाजी महाराज के बारे में बच्चों को सिखाना बहुत ज्यादा जरूरी है।

महिलाओं को वकालत का हक दिलाने वाले डॉ. गौर

- रजनीश जैन, सागर

भारत की अदालतों में वकालत कर रही महिला वकीलों को जिस एक शख्स का सबसे ज्यादा आभारी होना चाहिए वो हैं डॉ. हरिसिंह गौर। यह दुर्लभ तथ्य है कि डॉ. गौर ने ही नागपुर लेजिस्लेटिव असेंबली में वकालत प्रोफेशन में लैंगिक भेद खत्म करने के लिए 28 फरवरी 1923 को बिल पेश किया। इस बिल पर जमकर बहस की और 'लीगल प्रैक्टिशनर (वूमन)एक्ट 1923' को भारी बहुमत से पास करवाया।

डॉ. गौर के पास यह मामला पटना के मशहूर वकील मधुसूदन दास लेकर गये थे। हुआ यह कि विधि की डिग्री लेकर आई सुधांशु बाला हाजरा ने 28/11/1921 को पटना हाईकोर्ट में प्रैक्टिस हेतु एनरोल करने का आवेदन दिया। इस आवेदन को पटना हाईकोर्ट की फुलबेंच ने निरस्त कर दिया। हाजरा और उनके वकील मधुसूदन दास ने चीफ जस्टिस से लेकर सभी सक्षम

अथारिटी तक लिखापढ़ी की लेकिन उन्हें निराशा ही मिली। तब दास को देश के महान कानूनविद् डॉ. हरिसिंह गौर की याद आई जो उस समय नागपुर लेजिस्लेटिव असेंबली के सदस्य थे। दास ने डॉ. गौर के सामने इस समस्या को रखा। डॉ. गौर की बेटियां भी बड़ी हो रही थीं। वे तुरंत समझ गये कि वकालत के पेशे में महिलाओं के लिए ज्यूडीशियरी के दरवाजे बंद हैं और उन्हें खुलवाने के लिए कानूनी प्रावधान होना चाहिए। हालांकि तीन माह पहले

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंग्लैंड में लागू हुए 'सेक्स डिसक्वालिफिकेशन एंड रिमूवल एक्ट 1919' को आधार बना कर कारनेलिया सोराबजी को वकील के रूप में मान्यता दे दी थी लेकिन उनके अधिकार सीमित थे। सोराबजी अदालत में सीधे जिरह नहीं कर सकती थीं, वे अदालती मामलों पर अपनी राय बनाकर अदालत में पेश कर सकती थीं। डॉ. गौर को भी यह तथ्य मालूम था और उन्होंने कारनेलिया सोराबजी के कानूनी काम की सक्षमता को एक उदाहरण के रुप में असेंबली की बहस में इस्तेमाल किया।

डॉ. गौर ने 1/2/1922 को एक संशोधन प्रस्ताव बनाकर नागपुर एसेंबली में भेजा। इस पर बहस करते हुए उन्होंने कहा कि, 'वकालत के पेशे में महिलाओं के खिलाफ जो गैरबराबरी का बर्ताव हो रहा है उसे हटा कर उन्हें प्रेक्टिस करने की अनुमति मिलना चाहिए। इसलिए क्योंकि यह न्याय का प्रश्न है, किसी के पक्ष विपक्ष का नहीं। महिलाओं ने राष्ट्र के लिए अतीत में गौरवपूर्ण सेवाएं विभिन्न क्षेत्रों में दी हैं जिन्हें देखते हुए वे वकालत के क्षेत्र की भी अधिकारी हैं।' मौलवी अब्दुलकासिम दक्खा ने डॉ. गौर के प्रस्ताव का इस तर्क के साथ समर्थन किया कि लाखों पर्दानशीं औरतों को सिर्फ इसलिए अदालती इंसाफ नहीं मिल पा रहा क्योंकि वे पुरूष वकीलों से बात नहीं कर सकतीं, इसलिए अपने मामले अदालत में नहीं लातीं। यदि औरतों को वकालत करने की छूट मिले तो उनको इंसाफ का रास्ता साफ हो। इस संशोधन विधेयक पर चली बहस के आधार पर एक पृथक विधेयक 28/2/1923 को सदन में लाकर भारी बहुमत से पास कर दिया गया।

इस कानून के आधार पर कारनेलिया सोराबजी का विधिवत रजिस्ट्रेशन 1924 में हुआ और वे पहली महिला वकील कहलाईं। लेकिन अदालतों में महिलाओं की कानूनी योग्यताओं के बारे में पूर्वाग्रह और कठनाईयां तब भी बहुत थीं। इसलिए 5 साल बाद ही कारनेलिया वकालत छोड़ कर घर बैठ गयीं। डॉ. हरिसिंह गौर ने अपनी बेटी स्वरूप कुमारी को 1931 में को लीगल एजूकेशन के लिए इंग्लैंड के 'इनर टेंपल में वहीं भेजा जहां से उन्होंने खुद कानून पढ़ा था। कानून की डिग्री लेकर आईं स्वरूप कुमारी को इंग्लैंड के बार ने

सम्मान पूर्वक वकालत के लिए आमंत्रित किया लेकिन प्रारब्ध ने कुछ और तय किया था। वहां विलियम ब्रूम से स्वरूप का प्रेम हुआ। दोनों की शादी हुई। ब्रूम भारत आकर इलाहाबाद हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार और जस्टिस बने। उनकी पत्नी के रूप में डॉ. गौर की बेटी स्वरूप कुमारी ने भारत में कभी लीगल प्रैक्टिस नहीं की। वे ब्रूम के न्यायिक कार्यों में अपने घर पर ही रहकर मदद करती रहीं और एक साधारण गृहिणी का जीवन जीती रहीं। 1970 में मि. ब्रूम के रिटायरमेंट के बाद एक दिन इलाहाबाद के बाशिंदों ने देखा कि मि. ब्रूम के बंगले का पूरा छोटा बड़ा सामान लॉन में करीने से रखा है। हरेक सामान पर उसकी कीमत का टैग चिपका हुआ है। सामान के साथ एक एकाउंटेंट सरीखा बैठा था। लोग आते और बिना बहस किए टैग देख कर सामान खरीद कर ले जाते रहे। वापस इंग्लैंड लौटते हुए ब्रूम परिवार सिर्फ निजी यादगार चीजें, रिफरेंस और गहने आदि ही ले गया।

लोगों में जिज्ञासा होती है कि लेखक को यह सब कैसे पता हो रहा है?...तो इसका एक उदाहरण देता हूं। इलाहाबाद में सेंट्रल इंटेलीजेंस के एक रिटायर्ड अधिकारी सुरेंद्र श्रीवास्तव डॉ. गौर पर मेरे लेखों को तबियत से पढ़ रहे हैं। वे लंबे समय सागर में पदस्थ रहे हैं और मेरे घनिष्ठ रहे हैं। लेखों को पढ़कर श्रीवास्तव जी ने मुझे फोन किया। चर्चा के बाद डॉ. गौर की बेटी का इतिहास खोजने श्रीवास्तव जी इलाहाबाद हाइकोर्ट के म्यूजियम में अब भी काम कर रहे 93 साल के श्री अहद साहब से मिले जो मि. ब्रूम के पीए रह चुके थे। इन बुजुर्गों ने अपनी याददाश्त के सहारे इलाहाबाद हाइकोर्ट स्थापना के शताब्दी वर्ष पर छपी स्मारिका से एक लेख, तस्वीरें और संस्मरण उपलब्ध कराये जो मुझ तक पहुंचे। ...तो ऐसे-ऐसे डॉ. गौर के प्रेमी इस पूरी दुनिया में फैले हुए हैं जो डॉ. गौर के लिए वृद्धावस्था में भी घर से निकलकर हाईकोर्ट परिसर में जाकर रिफरेंस तलाश कर सकते हैं। और ध्यान रहे कि ये लोग रिसर्च स्कालर नहीं हैं। मुझे भी दोबारा पीएचडी या डीलिट की लालसा नहीं। मैं यह सब इसलिए लिख रहा हूं कि डॉ. गौर ने ही मुझे इतना सब कर पाने के लिए सक्षम बनाया है। कोशिश इतनी भर है कि डॉ. गौर के कर्ज का सिर्फ सूद ही चुका सकूं।

विजय मशाल यात्रा का विचार समिति द्वारा स्वागत

विजय मशाल यात्रा का विचार टीम द्वारा स्वागत।

ऐतिहासिक विजय वर्षगांठ को एक उत्सव के रूप में मनाने के लिए नई दिल्ली से देश की चारों दिशाओं में स्वर्णिम विजय मशाल भेजी गई थी। दक्षिण दिशा की स्वर्णिम विजय मशाल यात्रा नासिक से चलकर सागर में 21 नवंबर रविवार को आई।

मशाल के स्वागत में विजय जुलूस की शोभायात्रा में विचार समिति के पदाधिकारी, समन्वयक, मोहल्ला टीमों के सदस्य नई कलेक्ट्रेट बिल्डिंग के सामने सिविल लाइन में उपस्थित हुए। यहां पर महार रेजीमेंट सेंटर के सैनिक एवं भूतपूर्व सैनिकों का विचार समिति ने स्वागत किया गया। इस अवसर पर विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने विचार समिति टीम सहित सैनिकों का माल्यापर्ण कर चंदन लगाकर सम्मान किया एवं 1971 युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने मशाल के साथ आसीन भूतपूर्व सैनिकों को प्रतीक चिन्ह भेंट किए इस अवसर पर वीनू राणा, अखिलेश समैया, सौरभ रांधेलिया, सुनीता अरिहंत, नितिन पटैरिया, पूजा पड़ेले, सुरेश पिंजवानी, मनोज जैन, धवल कुशवाहा, सचिन राजकमल, मनोज राय, कविता साहू, ममता अहिरवार, पूजा प्रजापति, राहुल अहिरवार, माधव यादव, विनय चौरसिया, अरविंद अहिरवार, जवाहर दाऊ आदि उपस्थित थे।

10 राज्यों में पहुंची विचार गोमय पूजन किट

ऑनलाइन माध्यम से हुआ विक्रय

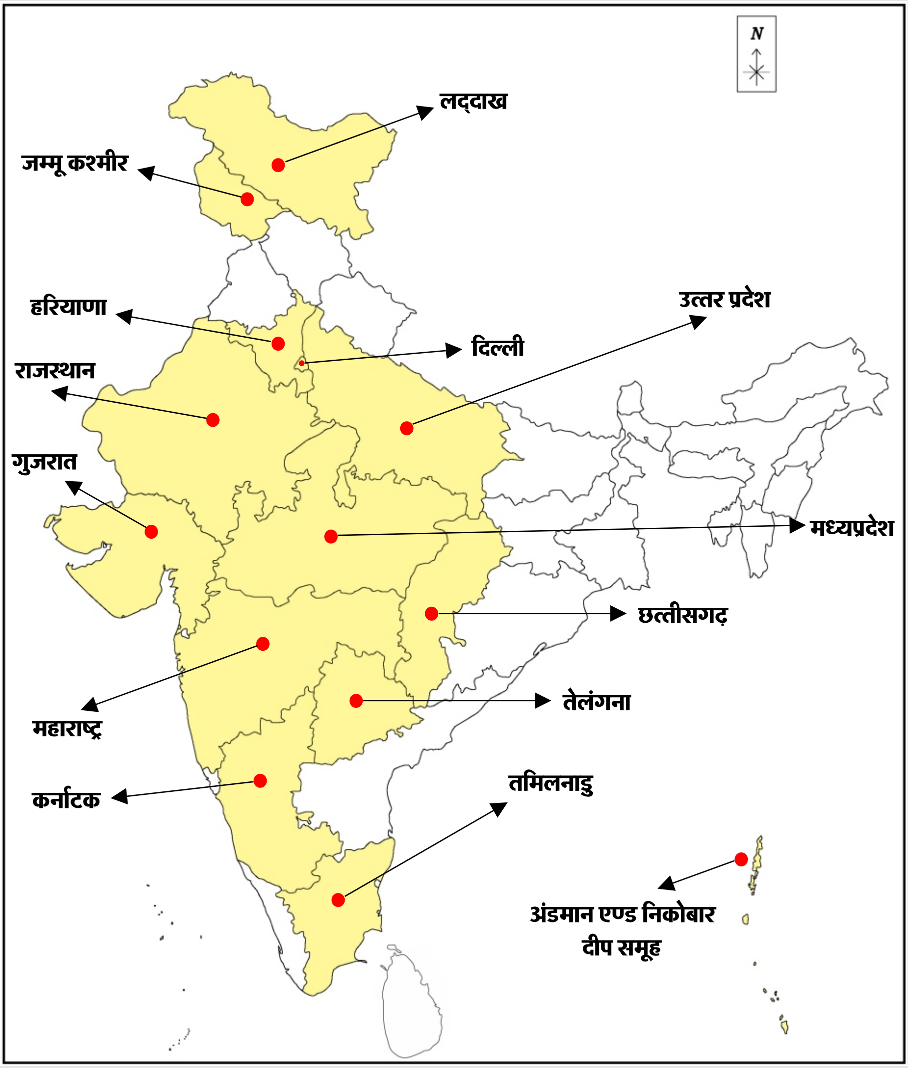

विचार समिति द्वारा दीपावली के पावन अवसर पर गोबर से निर्मित पूजन किट ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा तेलंगना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान आदि 10 राज्यों एवं दिल्ली, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, अंडमान एण्ड निकोबार दीप समूह से आर्डर मिलने पर समिति द्वारा पहुंचाई गईं।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय विचार समिति के लिए हर संभव मदद करेगा : कुलपति

गाय के गोबर से निर्मित पूजन सामग्री की जानकारी के लिए विचार समिति कार्यालय में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया बिजिट

समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया गोबर के गणेश कुलपति डॉ. गुप्ता को भेंट करते हुए।

विचार समिति ने इस वर्ष लोकल फॉर वोकल या स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देते हुए गाय के गोबर से पूजन सामग्री बनवाई थी जिसमें दिये, ओम, श्री, स्वात्विक, गणेश जी, लक्ष्मी जी की प्रतीकात्मक मूर्तियां आदि स्वदेशी उत्पादों के माध्यम से मोहल्ला विकास एवं स्व सहायता समूह की 500 महिलाओं को स्वरोजगार की दिशा में जोड़ा। हाल ही में गोबर से धूपबत्ती, मच्छरबत्ती बनवाने पर कार्य किया जा रहा है। विचार समिति अपनी कार्यशैली, सेवाभाव, स्वरोजगार एवं पर्यावरण के प्रति उत्कृष्ट योगदान के साथ शहर एवं राष्ट्रीय स्तर पर पहचान पा रही है।

समिति की प्राथमिकताओं के संबंध में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने समिति कार्यालय में बिजिट किया। हाल ही में विश्वविद्यालय में कामधेनु अध्ययन एवं शोध पीठ की स्थापना हुई है जिससे गौ संवर्धन के क्षेत्र में काफी बदलाव आएगा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि विचार समिति गौ संवर्धन, संरक्षण और

कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता ने विचार कार्यालय में भ्रमण किया।

स्वरोजगार के लिए गोबर से निर्मित स्वदेशी उत्पादों के माध्यम से सराहनीय कार्य कर रही है जिससे राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका बनेगी। उन्होंने समिति के लिए आश्वासन दिया कि कामधेनु अध्ययन एवं शोध पीठ के माध्यम से विश्वविद्यालय समिति के लिए स्वदेशी उत्पादों में हर संभव सहयोग करेगा।

विचार समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने गोबर से निर्मित पूजन सामग्री की जानकारी देते हुए समिति की प्राथमिकताओं से अवगत कराया। समिति 17 वर्षों से निरंतर सागर सुधार-सागर विकास के लिए कार्य कर रही है। स्वरोजगार की दिशा में इस प्रोजेक्ट के माध्यम से पांच लाख दिये बनवाये गए थे। अगले वर्ष लगभग 25 लाख दिये बनवाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि समिति को इंदौर शहर से अगले वर्ष के लिए पांच लाख दिए बनवाने का आर्डर मिल चुका है। मैं डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करता हूं कि कामधेनु अध्ययन एवं शोधपीठ के आपसी सहयोग से समिति को स्वदेशी उत्पादों पर कार्य करने का अवसर मिलेगा।

समिति मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने बताया कि कोरोनाकाल से कई परिवार रोजगार से वंचित हो गए थे। समिति द्वारा स्थानीय स्तर पर ऐसे परिवारों को स्वदेशी उत्पादों के माध्यम से रोजगार देने का प्रयास किया गया।

मीडिया प्रभारी अखिलेश समैया ने कहा कि भारत सरकार आत्म निर्भर भारत बनाने के लिए पुरजोर कार्य कर रही है। समिति स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने पर कार्य कर रही है ताकि विदेशों में जाने वाला पैसा भारत में ही रहे। इस अवसर पर प्रीति मलैया, डॉ. अर्चना पांडेय, डॉ. ललित मोहन दुबे, अनुष्का मलैया, मार्गदर्शक सूरज सोनी, कविता साहू, राहुल अहिरवार, पूजा प्रजापति, पूजा लोधी, जवाहर दाऊ, विनय चौरसिया, नीलेश पटैल आदि उपस्थित थे।

सुरेश जैन आईएएस बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार एवं न्यायमूर्ति विमला जैन समाज गौरव उपाधि से अलंकृत

श्री दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में सुरेश जैन आईएएस को बाबूबालचंद मलैया स्मृति पुरस्कार दिया गया।

प्रभावना जनकल्याण परिषद (रजि.) के तत्वावधान में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरी जिला छतरपुर में परम पूज्य आचार्य श्री उदारसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में ब्र. जयकुमार जी निशांत के निर्देशन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान श्री सुरेश जैन आईएएस भोपाल को बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार एवं न्यायमूर्ति विमला जैन जी 'समाज गौरव' उपाधि से समारोह पूर्वक अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद के प्रचारमंत्री अनिल शास्त्री सागर ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया इसके बाद मंचासीन अतिथियों ने चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलित किया।

प्रशस्ति-पत्र का वाचन करते हुए परिषद के उपाध्यक्ष राजेश रागी पत्रकार बकस्वाहा (महामंत्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति) ने कहा कि श्री सुरेश जैन आईएएस भोपाल को समाज, संस्कृति और तीर्थ संरक्षण में दिए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार -2021 प्रदान किया जा रहा है।

21000/- इक्कीस हजार रुपये पुरस्कार राशि के साथ प्रतीक चिन्ह, शाल, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, माला, पगड़ी आदि के साथ समारोह पूर्वक अतिथियों एवं परिषद के पदाधिकारियों को भेंट किया। इस पुरस्कार

प्रभावना जनकल्याण परिषद (रजि.) के तत्वावधान में सिद्धक्षेत्र नैनागिरी में हुआ आयोजन

के पुण्यार्जक श्री महेश कुमार कपिल मलैया परिवार सागर रहे। सुरेश जी आईएएस ने पुरस्कार में प्राप्त राशि नैनागिर विद्यालय के लिए दान कर दी।

इस मौके पर न्यायमूर्ति विमला जैन जी भोपाल (सेवानिवृत्त हाईकोर्ट जज मध्यप्रदेश) को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'समाज गौरव' उपाधि से प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, शाल, पगड़ी, माला आदि के साथ अलंकृत किया गया।

समारोह का संचालन पुरस्कार संयोजक डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। परिषद के अध्यक्ष सुनील शास्त्री टीकमगढ़ ने स्वागत भाषण के साथ परिषद के उद्देश्यों एवं गतिविधि पर प्रकाश डाला। आभार प्रदर्शन कार्यक्रम संयोजक मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ एवं चेतन जैन बंडा ने किया।

इस दौरान परिषद के निदेशक ब्र. जयकुमार जी निशांत भैया टीकमगढ़ ने कहा कि सुरेश जी आईएएस एवं न्यायमूर्ति विमला समाज के गौरव हैं, ऐसे व्यक्तित्व के सम्मान से हम सभी गौरवान्वित हैं। पुरस्कार पुण्यार्जक समाजसेवी कपिल मलैया सागर ने बाबू बालचंद्र जी मलैया के योगदान को रेखांकित किया। सुरेश जी आईएएस ने कहा कि यह संस्था इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे, दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करे तथा धर्म-संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करती रहे। न्यायमूर्ति विमला जी जैन ने कहा कि धर्म और संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करते रहें, मार्ग में बाधाएं आएंगी परन्तु आगे बढ़ते रहें। परम पूज्य आचार्य श्री उदारसागर जी महाराज ने पुरस्कृत महानुभावों एवं आयोजक संस्था को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

विशिष्ट अतिथि श्रीमंत सेठ श्री सुरेश चंद जैन सागर ने कहा कि जो पुरस्कृत होते हैं उनको नई ऊर्जा मिलती है तथा अन्य लोगों को प्रेरणा मिलती है। इस मौके पर पंचकल्याणक महोत्सव समिति के अध्यक्ष देवेन्द्र लुहारी सागर, महामंत्री राजेश रागी बकस्वाहा, कमलेंद्र जैन क्षेत्रीय अध्यक्ष भारतीय जैन मिलन सागर, देवेंद्र फुसकेले जिला मंत्री भारतीय जनता पार्टी सागर, सुनीता जैन अरिहंत ,दामोदर सेठ शाहगढ़, परिषद के संरक्षक ऋषभ चंदेरिया कोतमा, मनोज बंगेला सागर, श्रेयांस सिंघई, सागर, वीरेन्द्र निमानी बकस्वाहा, सुमति प्रकाश मढ़देवरा, गोल्डी जैन बकस्वाहा, मोतीलाल साधेलिया, जयकुमार जैन, सुरेश दाऊ बाँसा आदि अतिथिगण प्रमुख रूप से मंचासीन रहे। पंचकल्याणक महोत्सव समिति द्वारा सभी अतिथियों का सम्मान किया गया।

डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयंती पर पधारे विशिष्ट अतिथियों को समिति ने गोबर निर्मित पूजन किट भेंट कीं

डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती में पधारे अतिथियों को गोबर से निर्मित पूजन किट भेंट की गई।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 21 से 26 नवंबर को आयोजित गौर उत्सव में 24 नवंबर को गौर व्याख्यान माला, विषय - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा संस्थानों की नवाचारी भूमिका में पधारे मुख्य वक्ता श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर अखिल भारतीय संगठन मंत्री, प्रांतीय शिक्षा मंडल नागपुर, प्रो. बलवंत राय शांतिलाल जानी, विशिष्ट वक्ता सुश्री अरूधांति कावड़कर अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी महाकौशल प्रांत एवं मध्य भारत भा.शि.मं., प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर ने व्याख्यान दिए। मुख्य वक्ता कानिटकर जी ने कहा कि गुरू के बिना भारत विश्व गुरू बनना असंभव है। नई शिक्षा नीति में स्वबोध पैदा होता है जिसके माध्यम से भारतीयता का बोध पैदा होता है। भारतीय संस्कृति सदैव से ही समृद्ध, आत्मनिर्भर रही है।

हम सभी अब आत्मनिर्भर की दिशा में साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे। उन्होंने लोकल फॉर वोकल के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने एवं भारतीय भाषाओं को विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक तौर पर अपनाने की अपील की। इस कार्यक्रम में पधारे अतिथियों को विचार समिति के मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने गोबर से निर्मित स्वदेशी दीपावली पूजन किटें भेंट की। साथ ही विचार की गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर विचार सहायक धवल कुशवाहा, माधव यादव, विनय चौरसिया उपस्थित रहे।

टाइम लाइन - 2021

इस वर्ष विचार समिति की मुख्य गतिविधियां

झंडावंदन
माह - जनवरी 2021

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर विचार समिति द्वारा 105 स्थानों पर महिलाओं से झंडावंदन करवाया गया। झंडावंदन का उद्देश्य नारी शक्ति को बढ़ावा देना था। यह झंडावंदन सागर शहर के 48 वार्ड, केंट बोर्ड के 8 वार्ड एवं उपनगरीय क्षेत्र मकरोनिया के 18 वार्डों में महिलाओं द्वारा किया गया था।

अंत्योदय शिक्षा प्रेरक
माह - फरवरी 2021

अंत्योदय शिक्षा प्रेरक अभियान की शुरूआत कोरोना काल में 6 से 12 साल के बच्चे जो तकनीकि एवं अन्य कारणों से शिक्षा से वंचित रह गए थे। उन्हें 50 प्रेरकों द्वारा 750 बच्चों को निःशुल्क मौलिक शिक्षा प्रदान की।

स्व सहायता समूह
माह - मार्च 2021

मोहल्ला विकास योजना के अंतर्गत 18 स्व सहायता समूहों का समिति व नगर निगम के सहयोग से गठन किया गया जिसमें समिति ने गोबर से निर्मित स्वदेशी उत्पादों का महिलाओं द्वारा निर्माण कराकर रोजगार मुहैया कराया।

सुंदर गांव-समझदार गांव

माह - मार्च 2021

विचार समिति ने सुंदर गांव-समझदार गांव योजना की शुरूआत 2 मार्च 20 को जैसीनगर के पास सागौनी पुरैना गांव से की थी। इसके पश्चात मनेशिया, डगरानिया गांवों का भ्रमण कर नशामुक्ति, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया। द्रोणगिरि में विचार टीम ने स्वच्छता अभियान चलाया।

कोरोना सहायता

माह - अप्रैल 2021

कोरोना काल में समिति द्वारा घर-घर जाकर 11 हजार लीटर सैनिटाइजर जल, 2110 परिवारों को राशन किट, 3140 मास्क बांटे गए। 17 दिनों तक श्रमिक राहगीरों को भोजन, खिचड़ी, सत्तू, पानी वितरित किया गया। दो माह तक कोरोना जागरूकता रथ चलाया गया। बीएमसी में 8 माह तक कोरोना हेल्प डेस्क के माध्यम से 1990 मरीजों की समस्याओं का निराकरण किया गया।

ऑक्सीजन बैंक

माह - मई 2021

कोरोना से संक्रमित मरीजों को ऑक्सीजन उपलब्ध कराने के लिए विचार समिति ने 10 ऑक्सीजन सिलेंडरों के साथ निःशुल्क ऑक्सीजन सिलेंडर प्रदान करने के लिए ऑक्सीजन बैंक की शुरूआत की थी। इसके अलावा कोरोना से बचाव की छह हजार मैथलीन ब्लू दवा वितरित की गई थी।

नि:शुल्क नेत्र शिविर

माह - जून 2021

शंकराचार्य नेत्रालय गोटेगांव व विचार समिति के तत्वावधान में पूर्ण अंधत्व निराकरण के लिए शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 92 लोगों का नेत्र परीक्षण कर 42 व्यक्तियों को मोतियाबिंद की शिकायत पाई गई। इनमें से 14 मरीजों को मोतियाबिंद आपरेशन के लिए शंकराचार्य नेत्रालय भेजा गया था जिनका सफल आपरेशन हुआ।

1100 वृक्षारोपण

माह - जून 2021

10वीं वाहिनी बिसवल मकरोनिया की परेड मैदान पहाड़ी को हरा भरा रखने के लिए 1100 पौधों का वृक्षारोपण समिति द्वारा 19 जून को किया गया। जल संरक्षण के लिए लंबे-लंबे ट्रेंच बनाए गए। वृक्षारोपण दो स्थानों पर संकल्प वन व ओशो वन में किया गया। समिति शहर में प्रकृति व पर्यावरण के प्रति हर कार्य को करने में सदैव तत्पर है।

मियावाकी वन

माह - जून 2021

विचार समिति द्वारा शहर का दूसरा मियावाकी वन स्व. श्रीमति आशारानी मलैया जी की स्मृति में मंगलगिरी में बनाया। जिसमें 3000 वर्गफीट जगह में 1500 पौधे लगाए गए थे जो अब हाइट मीटर के हिसाब से 8 से 10 फीट तक हो गए हैं। समिति का उद्देश्य है कि इस प्रकार के 100 से अधिक स्मृति वन बनें।

इंटर्नशिप
माह - जुलाई 2021

देहरादून की यूपीईएस यूनिवर्सिटी की पहल पर समिति द्वारा 25 छात्रों को बीज बॉल प्लांटेशन परियोजना, स्वाभिमानी समूह परियोजना, संपूर्ण शिक्षा अभियान, स्वास्थ्य मित्र अभियान आदि विषयों पर 4 अनुभवी मार्गदर्शकों के अधीन इंटर्नशिप कराई गई। इस इंटर्नशिप का शुभारंभ उत्तराखंड के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत द्वारा किया गया था।

झंडावंदन
माह - अगस्त 2021

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समिति ने सागर शहर में 1133 स्थानों पर झंडावंदन करवाकर बच्चों, बुजुर्गों व युवाओं के झंडावंदन को लेकर सपने को साकार किया। झंडावंदन कार्यक्रम में सबसे सुसज्जित व आकर्षक प्रस्तुतियां देने वाले 51 परिवारों के 150 बच्चों को सम्मानित किया गया।

गोबर के गणेश
माह - सितंबर 2021

विचार समिति ने महिलाओं को रोजगार देने के उद्देश्य से एवं पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए ईको फ्रेंडली गोबर के गणेश की प्रतिकात्मक मूर्तियां बनाई थीं। 350 से ज्यादा महिलाओं ने 1500 से ज्यादा छोटे व बड़े गणेश जी प्रतिमाएँ बनाई थीं। इन प्रतिमाओं को बनाने के लिए विचार टीम ने नागपुर के गौ विज्ञान केंद्र से प्रशिक्षण लिया था।

कल्पवृक्ष
माह - अक्टूबर 2021

समिति ने शहर के अलग-अलग स्थानों पर सुख-समृद्धि व खुशहाली के लिए 16 कल्पवृक्ष लगाए थे। इस वृक्ष में अपार सकारात्मक उर्जा होती है। यह वृक्ष पर्यावरण संतुलन में सहयोगी, रोगाणुओं, कीटपतंगों को अपने पास नहीं फटकने देता। प्रदूषण को कम करता है साथ ही वेदों के अनुसार इस वृक्ष के समीप खड़े होकर जो भी इच्छा होती है व पूर्ण होती है।

दिया प्रोजेक्ट
माह - नवंबर 2021

समिति ने मोहल्ला विकास व स्व सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार देने के उद्देश्य से 5 लाख दिए बनवाए थे। इस प्रोजेक्ट के माध्यम से 500 महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाना, गौ संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन में सहयोग करना था। इन महिलाओं को पारिश्रमिक के तौर पर 3.5 लाख रुपए की राशि दी गई।

स्वदेशी उत्पाद केंद्र
माह - नवंबर 2021

विचार समिति ने जवाहरगंज वार्ड कटरा स्थित स्वदेशी उत्पाद केंद्र की स्थापना की। इस उत्पाद केंद्र के माध्यम से समिति अपने स्वदेशी उत्पाद एवं स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए जगह उपलब्ध कराएगी। इस केंद्र में गोबर से निर्मित गणेश प्रतिमा, लक्ष्मी प्रतिमा, दिए, ओम, श्री, स्वात्विक, शुभ-लाभ, धूपबत्ती, मच्छरबत्ती, हर्बल साबुन, स्वीटलीफ पत्ती, स्किन केयर, एलोबेरा जेल आदि उपलब्ध हैं।

मीडिया कवरेज

विजय मशाल यात्रा का विचार समिति ने किया स्वागत

सागर | विजय मशाल का विचार संस्था ने स्वागत किया। विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने विचार समिति की टीम सहित सैनिकों का माल्यार्पण कर चंदन लगाकर सम्मान किया एवं 1971 युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने मशाल के साथ आसीन भूतपूर्व सैनिकों को प्रतीक चिन्ह भेंट किए। इस अवसर पर वीनू राणा, अखिलेश समैया, सौरभ रांधेलिया, सुनीता अरिहंत, नितिन पटैरिया, पूजा पड़ेले, ममता अहिरवार, सुरेश पिंजवानी, मनोज जैन, धवल कुशवाहा, मनोज राय, कविता साहू, पूजा प्रजापति, राहुल अहिरवार, माधव यादव आदि उपस्थित थे।

विजय मशाल यात्रा का विचार समिति ने किया स्वागत

अतुल्य भास्कर, सागर। ऐतिहासिक विजय वर्षगांठ को एक उत्सव के रूप में मनाने के लिए देश की चारों दिशाओं में स्वर्णिम विजय मशाल भेजी गई थी। दक्षिण दिशा की स्वर्णिम विजय मशाल यात्रा नासिक से चलकर सागर में 21 नवंबर रविवार को आई। मशाल के स्वागत में विजय जुलूस की शोभायात्रा में विचार समिति के पदाधिकारी, समन्वयक, मोहल्ला टीमों के सदस्य नई कलेक्ट्रेट बिल्डिंग के सामने सिविल लाइन में उपस्थित हुए। यहां पर महार रेजीमेंट सेंटर के सैनिक एवं भूतपूर्व सैनिकों का विचार समिति द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने विचार समिति की टीम सहित सैनिकों का माल्यार्पण कर चंदन लगाकर सम्मान किया।

स्वर्णिम विजय मशाल यात्रा का विचार समिति ने किया स्वागत

सागर। एतिहासिक विजय वर्षगांठ को एक उत्सव के रूप में मनाने के लिए नई दिल्ली से देश की चारों दिशाओं में स्वर्णिम विजय मशाल भेजी गई थी। दक्षिण दिशा की स्वर्णिम विजय मशाल यात्रा नासिक से चलकर सागर में 21 नवंबर रविवार को आई। मशाल के स्वागत में विजय जुलूस की शोभायात्रा में विचार समिति के पदाधिकारीए समन्वयक, मोहल्ला टीमों के सदस्य नई कलेक्ट्रेट बिल्डिंग के सामने सिविल लाइन में उपस्थित हुए। यहां पर महार रेजीमेंट सेंटर के सैनिक एवं भूतपूर्व सैनिकों का विचार समिति द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने विचार समिति की टीम सहित सैनिकों का माल्यार्पण कर चंदन लगाकर सम्मान किया एवं 1971 युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति की सचिव आकांक्षा मलैया ने मशाल के साथ आसीन भूतपूर्व सैनिकों को प्रतीक चिन्ह भेंट किए। इस अवसर पर वीनू राणाए अखिलेश समैया, सौरभ रांधेलिया, सुनीता अरिहंत, नितिन पटैरिया, पूजा पड़ेले, सुरेश पिंजवानी, मनोज जैन, धवल कुशवाहा, सचिन राजकमल, मनोज राय, कविता साहू, पूजा पड़ेले, ममता अहिरवार, पूजा प्रजापति, राहुल अहिरवार, माधव यादव, विनय चौरसिया, अरविंद अहिरवार, जवाहर दाऊ आदि उपस्थित थे।

सागर दिनकर

स्वर्णिम विजय यात्रा का विचार संस्था ने नए कलेक्ट्रेट भवन के सामने स्वागत किया। ● [illegible]

मीडिया कवरेज

आयोजन • सुरेश जैन आईएएस बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार से सम्मानित

सिद्धक्षेत्र नैनागिर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का रथयात्रा के साथ समापन हुआ

भास्कर संवाददाता | सागर

जैन तीर्थ स्थल नैनागिरी में विराजमान आचार्य उदारसागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में ब्र. जयकुमारजी निशांत के निर्देशन में चल रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का गुरुवार को रथयात्रा के साथ समापन हुआ। इस दौरान समाज की विभूतियों में सुरेश जैन आईएएस भोपाल को बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार एवं न्यायमूर्ति विमला जैन समाज गौरव उपाधि से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद के प्रचारमंत्री अनिल शास्त्री सागर ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन करते हुए राजेश रागी ने कहा कि सुरेश जैन को समाज, संस्कृति और तीर्थ संरक्षण में दिए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार 2021 प्रदान किया जा रहा है। 21 हजार रुपए पुरस्कार राशि के साथ प्रतीक चिह्न, शाल, प्रशस्ति-पत्र, श्रीफल, माला,

सागर | पंचकल्याणक महोत्सव में उपाधि प्रदान करते हुए समाजसेवी।

पगड़ी के साथ प्रदान किया। पुरस्कार के पुण्यार्जक महेश कुमार कपिल मलैया परिवार सागर रहे। सुरेशजी आईएएस ने पुरस्कार में प्राप्त राशि नैनागिर विद्यालय के लिए दान कर दी। इस मौके पर न्यायमूर्ति विमला जैन भोपाल को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए समाज गौरव उपाधि से प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, शाल, पगड़ी, माला आदि के साथ अलंकृत किया। संचालन डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। परिषद अध्यक्ष सुनील शास्त्री टीकमगढ़ ने स्वागत भाषण, आभार मनीष विद्यार्थी शाहगढ़, चेतन जैन बंडा ने माना।

ब्र. जयकुमारजी निशांत भैया टीकमगढ़ ने कहा कि सुरेशजी आईएएस एवं न्यायमूर्ति विमला समाज के गौरव हैं, ऐसे व्यक्तित्व के सम्मान से हम सभी गौरवान्वित हैं। पुरस्कार पुण्यार्जक समाजसेवी कपिल मलैया ने बाबू बालचंद्र मलैया के योगदान को रेखांकित किया। सुरेश आईएएस ने कहा कि यह संस्था इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे। धर्म-संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करती रहे। न्यायमूर्ति विमला जैन ने कहा कि धर्म और संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करते रहें, मार्ग में बाधाएं आएंगी परन्तु आगे बढ़ते रहें। आचार्य उदारसागर महाराज ने पुरस्कृत महानुभावों एवं आयोजक संस्था को आशीर्वाद प्रदान किया। विशिष्ट अतिथि श्रीमंत सेठ सुरेश चंद जैन ने कहा कि जो पुरस्कृत होते हैं उन्हें नई ऊर्जा मिलती है तथा अन्य लोगों को प्रेरणा मिलती है। इस मौके पर महोत्सव समिति अध्यक्ष देवेन्द्र लुहारी, महामंत्री राजेश रागी, कमलेंद्र जैन, देवेंद्र फुसकेले, दामोदर सेठ, ऋषभ चंदेरिया कोतमा, मनोज बंगेला, श्रेयांस सिंघई, वीरेन्द्र निमानी, सुमति प्रकाश मड़देवरा, गोल्डी जैन, मोतीलाल सांधेलिया, जयकुमार जैन, सुरेश बांसा सहित अतिथि मंचासीन रहे। पंचकल्याणक महोत्सव समिति द्वारा सभी अतिथियों का सम्मान किया गया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का हुआ समापन

आचरण संवाददाता।

शाहगढ़। जैनो के तीर्थ स्थल नैनागिरी पर विराजमान आचार्य श्री उदारसागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में ब्र. जयकुमार जी निशांत के निर्देशन में चल रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का रथयात्रा के साथ गुरुवार को समापन हुआ।

इस दौरान समाज की विभूतियों में सुरेश जैन आईएएस भोपाल को बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार एवं न्यायमूर्ति विमला जैन जी 'समाज गौरव' उपाधि से समारोह पूर्वक अलंकृत भी किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद के प्रचारमंत्री अनिल शास्त्री सागर ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया इसके बाद मंचासीन अतिथियों ने चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलित किया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन करते हुए परिषद के उपाध्यक्ष राजेश रागी पत्रकार बकस्वाहा (महामंत्री पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

समिति) ने कहा कि सुरेश जैन आईएएस भोपाल को समाज, संस्कृति और तीर्थ संरक्षण में दिए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए बाबू बालचंद्र मलैया स्मृति पुरस्कार-2021 प्रदान किया जा रहा है। 21000/- इक्कीस हजार रुपये पुरस्कार राशि के साथ प्रतीक चिन्ह, शाल, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, माला, पगड़ी आदि के साथ समारोह पूर्वक अतिथियों एवं परिषद के पदाधिकारियों ने प्रदान किया गया। इस पुरस्कार के पुण्यार्जक महेश कुमार कपिल मलैया परिवार सागर रहे।

सुरेश जी आईएएस ने पुरस्कार में प्राप्त राशि नैनागिर विद्यालय के लिए दान कर दी। इस मौके पर न्यायमूर्ति विमला जैन जी भोपाल (सेवानिवृत्त हाईकोर्ट जज मध्यप्रदेश) को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'समाज गौरव' उपाधि से प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, शाल, पगड़ी, माला आदि के साथ अलंकृत किया गया। समारोह का संचालन पुरस्कार संयोजक डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। परिषद के अध्यक्ष सुनील शास्त्री टीकमगढ़ ने स्वागत भाषण के साथ परिषद के उद्देश्यों एवं गतिविधि पर प्रकाश डाला। आभार प्रदर्शन कार्यक्रम संयोजक मनीष विद्यार्थी शाहगढ़ एवं चेतन जैन बंडा ने किया। इस दौरान परिषद के निदेशक ब्र. जयकुमार निशांत भैया टीकमगढ़ ने कहा कि सुरेश जी आईएएस एवं न्यायमूर्ति विमला समाज के गौरव हैं, ऐसे व्यक्तित्व के सम्मान से हम सभी गौरवान्वित हैं।

पुरस्कार पुण्यार्जक समाजसेवी कपिल मलैया सागर ने बाबू बालचंद्र जी मलैया के योगदान को रेखांकित किया। सुरेश जी आईएएस ने कहा कि यह संस्था इसीप्रकार आगे बढ़ती रहे, दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करे तथा धर्म-संस्कृति के लिए निरंतर कार्य करती रहे।

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

BHIM UPI

VICHAR SAMITI

Pay With Any App

G Pay Paytm PhonePe WhatsApp amazon

150+ Apps

Powered By BharatPe

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com

Facebook : Vichar Sanstha

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002